Folk Dances of GARHWAL

THHADYA NRITYA, Gharwal

गढ़वाल के लोकनृत्य

FOLK DANCES OF GARHWAL

A philosophical attitude to life in spite of their unspoilt simplicity and innocence, and a ready smile on their faces in spite of having to grapple with the struggles of a hard life---these are some of the special characteristics of the people who belong to the Garhwal area which covers Paudi, Tehri, Uttarkashi, Chamoli and DehraDun. Surrounded by the lofty Himalayas in the North, the planes of Saharanpur and Bijnor in the South Kumaun in the East, and the river Tamasa in the West, Garhwal has a special pride of place because this region contains pilgrimage-spots like *Gangotri* and *Yamunotri* sacred to the whole country, and through this area flow 4 sacred rivers *Ganga, Yamuna, Alaknanda,* and *Bhagirathi.* It is also the meeting-ground for followeres of many religions with Badrikasram for followers of Vaishnavism, Kedarnath for Shaivites, Hemkund where Lakshmana did his penance, Gurudwaras of the Sikhs, and so on. Sreenagar where Adi Shankara expounded his "*Advaita*" philosophy is also part of Kedarkhand. The region also abounds in sacred caves named after Ganesh, Narada, Vyas, and many other Rishis and Munis. No wonder the place is known as "*Tapobhumi*" (sacred place for penance), *Brahmapuri,* or *Swargabhumi* (Heaven).

The folk songs and dances of every region are moulded by the social and cultural history, pace and style of life, beliefs and traditions, and geographical and climatic conditions of the place. The folk songs of the Garhwal region can be classified under five heads:-

1. "*Upasana Geet*" (Songs for prayers) like "Aahwan geet" and "Pooja geet".

2. "*Samskaar geet*"-sung on auspicious occasions like births and weddings.

3. "*Dharmic geet*" like "Jaagar".

4. *Seasonal, romantic,* and *songs during work.*. like "Chopli", "Chapeli",Thaadya", "Chauphula", "Chaachri",

5. *Songs of valour.* e.g Pawade.

Garhwali singers sing in a tremulous voice and generally omit one swara out of a group or sequence for instance:-

PA DHA SA RI GA (Ni is omitted).
NI SA RI MA PA. (GA is omitted).
NI SA GA MA DHA. (RI is omitted) and so on.

The tunes are set in many variations of Dadra and Kaharwa taalas (rhythms). Living in mountainous terrains, the Garhwalis' folk dances are slow and calm in pace. Like their songs, their folk dances also can be classified under:-

1. *Dev bhavna ke nritya* (Devotion to Gods). e.g "Nirankaar", "Bhairu" and "Devinrutya".
2. *Dharmic* (Pertaining to religion and mythology)- e.g "Draupadi baaja nritya".
3. *Community dances.* "Thaadya", "Chauphula", "Jhumelo", "Chad-de"
4. Professional or connected with work:-"Thhaali", "Hudkya", "Farooqi", "Nati" etc.

Out of the above, "*Thaadya*", "*Chauphula*", and "*Jhumelo*" are the more popular folk-dances

Jhumelo. "Baara maina ko baara ritu ali jhumelo
"Hamaari" this song is being sung by the women in memory of their parental homes.

"The twelve months will beget the twelve seasons but none would be for me. Those with their loved ones at home would meet them but it is exile for me."

During the months of Phagun (February) and Chaitra (March) married women get together in the jungles and fields and as they sing songs full of longing for their parental homes they weep also in the surrounding presence of Nature who is witness and companion of their joys and sorrows. If they are unable to go to their parental homes for Basant festival, they express their common sorrow through these songs. Sometimes they are able to go to their childhood homes but then they sadly vecall their "Sasural" (husbands home) too. Sometimes young unmarried girls also join in these dances. Holding the neighbour's hands and standing in a circle, they move back and forth in slow movements, and sing these sad songs in chorus.

Thaadya. "Ke saari khulyu chalai bhaari...."
`What smells so sweet, where has the mustard grown?

It's in the fields there below, come sister let's get the flowers, I too have to go."

During the weeks between Basant Panchami and Baisakhi, women gather in circles in the outer courtyards of their homes and dance, and the dancers are the married daughters who have come home to their parents. The young women form two groups. Standing in a semi-circle, the girls of one group place their hands on their neighbour's shoulders and dance in slow movements to the rhythm of the songs, while the girls of the other group stand in a row and mark time with their feet, joining in the chorus in the last lines of the songs. Towards the end, they encircle one another's waists and dance in a more accelerated tempo.

CHAUPHULA dance. Perhaps the dance takes its name from the beauty and joy of Nature scattering flowers *(phula)* in all directions *(chau).* Like the many Vaishnava inspired group-dances such as the Garbo of Gujarat, the Raas of U.P., and the Bihu of Assam, "Chauphula" is a group dance performed in open meadows by young men and women in Garhwali costumes and finery. The young men and women stand in two rows facing each other; as they move forward dancing, they clap the hands of their respective partners in front, and then stepping back, they clap their hands in rhythm. Gradually the two groups join in a big circle, and the hand -clappings and feet-tappings merge into one celebration of rhythms. The texts of the songs are in the form of romantic teasings, questions and answers.

Question. "Nanad tera daadu karan jyuch..."
`O! Where has your brother gone?"
"He has gone to the jeweller's shop."
"What is he doing there?"
"Moulding nath and besar".

Vijay Naresh

Chauphula Nritya (Garhwal)

गढ़वाल के लोकनृत्य

अपनी सारी सरलता और भोलेपन के साथ दार्शनिक अनुभूति और अन्ध्यात्विता तथा कठिन परिश्रम, जीवन संघर्ष में तपे मुरीदार मगर निश्छल और मुथा हंसी वाले चेहरों के जीवन का नाम ''गढ़वाल'' है– जो पौड़ी, टिहरी, उत्तरकाशी, चमौली और देहरादून इन पाँच जनपदों में फैला है।

उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणियों, दक्षिण में सहारनपुर और बिजनौर का मैदानी इलाका, पूर्व में कुमायूँ और पश्चिम में तमसा नदी से घिरे गढ़वाल को गंगा यमुना जैसे प्राणदायनी नदियों के जन्म स्थल होने का गौरव प्राप्त है। गंगोत्री, यमुनोत्री सारे भारत के लिये महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है और अलकनन्दा, भगीरथी, गंगा और यमुना की उपत्यकियों में फैले गढ़वाल में वैष्णवों का बद्रीका श्रम, शैवों का केदारनाथधाम, लक्ष्मण की तपस्या, भूमि हेमकुण्ड और गुरु गोविन्द सिंह की तपस्या और गुरुद्वारे के होने के कारण उत्तराखण्ड अनेक मतानुयायियों का संगम स्थल बन गया है।

अद्वैतवाद के आदि गुरु शंकराचार्य की रचना स्थली श्रीनगर (केदारखण्ड) रही है। बद्रीनाथ में शंकराचार्य जी ने विष्णु प्रतिमा स्थापना की। यह भिन्न–भिन्न भाषा–भाषी भारतीयों को एक सूत्र में बांधने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था।

भारतीय संस्कृति, भारतीय जन–जीवन, गंगा, यमुना और हिमालय का अटूट सम्बन्ध है। बद्रीनाथ के पास गणेश गुफा, मुकुन्द गुफा, व्यास गुफा, नारद गुप्ता, आदि ऋषि मुनियों की तपोभूमि रही है। सृष्टि के विराट रूप ने मानव के सदैव नतमस्तक होने, जीवन का विश्लेषण करने को प्रेरित किया है। इन्हीं कारणों से सम्भवत: इस क्षेत्र को तपोभूमि, ब्रह्मपुरी और स्वर्गभूमि कहा गया है।

किसी भी क्षेत्र के सामाजिक इतिहास, सांस्कृतिक इतिहास, मान्यताओं और यहाँ तक कि मौसम के चरित्र को जानने के लिये उन क्षेत्र के लोक संगीत का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है तब परत हर परत सब स्पष्ट होता चलता है।

अपने भूगोल, मौसम, दर्शन जी का शैली और सामाजिक विशेषताओं को समेटे यहाँ के लोकगीत मुख्यरूप से चार वर्गों में वर्गीकृत किये जा सकते हैं।

१. उपासना गीत–जैसे आहवान गीत, पूजा गीत
२. संस्कार गीत–जन्म विवाह गीत
३. धार्मिक गीत–जागर आदि
४. मौसमी, श्रृंगार एवं श्रमगीत– छोपली, छपेली, थड्या, चौपुला, चोंचरी आदि
५. वीर गीत–पवाडें आदि

गढ़वाली गायकों के काँपते स्वर अपनी धुनों में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय अक्सर क्षेत्र का एक स्वर छोड़ देते हैं।

लोकधुनों की विशेषता है –

उदाहरणार्थ :

प़ ध सा रे ग नि़ सा रे मम नि़ सा ग म ध सा रे म प ध

धुनें दादरा और कहरवा के अनेक प्रकारों में बंधी रहती हैं। दुर्गम पहाड़ियों के कारण गढ़वाल के लोकनृत्यों की गति धीमी और शान्त है। विश्वास, रीतियों और सामाजिक संरचना पर आधारित इनके लोकनृत्यों की मूल रूप से निम्न वर्गों में रखा जा सकता है: –

(१) देव भावना के लोकनृत्य–निरंकार, भैरुं, देवी नृत्य,
(२) धार्मिक भावना के लोकनृत्य–द्रोपदी बाजा नृत्य,
(३) सामाजिक लोकनृत्य–थड्या चौपुला, झुमैल्लो, चदड़े आदि
(४) व्यावसायिक लोकनृत्य–हुडक्या, थाली, बरौटी नटी आदि

उपर्युक्त लोकनृत्यों में थड्या, चौपुला और झुमैलो लोकनृत्य सर्वाधिक लोकप्रिय और चर्चित हैं।

झुमैलो– **''बारा मैना को बारा ऋतु आली झुमैलो**
हमारी दौं क्यै न्रसुनी आई झुमैलो
जौं का हाला माई ऊ मैती जाला झुमैलो
नियैंता देश गाड़ शैली धार झुमैलो''
गाने का अवसर– फागुन और चैत्र मास।

महिलायें जंगलों या खेतों में एकत्रित होकर अपने मायके के लोगों को याद करके गाती हैं और रोती हैं। प्रकृति उनकी सहचरी, उनकी संगिनी, उनकी राजदार होती हैं उनके सुख दुख की साथी। अकेले अथवा दो तीन महिलायें मिलकर गाती हैं उन सबका दुख एक होता है। स्वर एक होते हैं। अभिव्यक्ति एक होती है।

यह दुख की साझेदारी है। वे तो बसन्त आने पर भी मायके नहीं जा पातीं। या फिर मायके पहुंच तो जाती हैं लेकिन ससुराल की व्यथा को भूल नहीं पातीं। सब एक स्वर हो जाती हैं। कभी–कभी यह नृत्य अविवाहित कन्याओं के द्वारा भी किया जाता है। इन व्यथा गीतों पर मंथरा जाति के नृत्य 'झूम झूम' कर गोल घेरे में बाहों में बाहें डालकर आगे पीछे मुड़ कर किया जाता है।

थड्या **''कै सारी फुल्यू चलाई भारी**
तलिसारी फुल्यू चलाई भारी
चल दीदी चल भुली लाई लाण
मिलवी ये दीदी हां तखी आण''

अवसर

बसंत पंचमी से बैसाख/घर के बाहर आंगन में महिलाएं घेरा बनाकर नृत्य करती हैं। ससुराल

से मायके आयीं बेटियां अपनी टोली बनाकर घरों के आंगन में प्राय: यह नृत्य करती हैं। दो टोलियों में बटी युवतियां एक दूसरे के कंधों पर हाथ रख लेती हैं और गीत के साथ नृत्य भी करती हैं। अर्धचन्द्राकार टोली जब पैरो से मंथरगति से आगे पीछे कर अपने गीत की लय के साथ नाचती हैं तब दूसरी सीधी खड़ी टोली अपने पैरों से थाप मार देती हैं। और गीत के अंतिम बोलों में स्वर भी मिलाती हैं। अंत में युवतियां कंधे से हाथ हटाकर अपने हाथ फैलाकर एक दूसरे की कमर के पीछे ले जाती हैं और बारी–बारी से आगे पीछे मुड़कर नृत्य करती हैं। धीरे–धीरे नृत्य की गति अपेक्षाकृत बढ़ जाती है।

चौंपुला नृत्य

गुजरात के गरबा नृत्य की तरह चौंपुला नृत्य भी सामूहिक नृत्य है जो संभवत: वैष्णव मतावलम्बियों के कारण कहीं रास, कहीं बिहू, कहीं गरबा के रूप में लोकप्रिय है। यह नृत्य खुले मैदानों में युवक–युवतियों द्वारा अलग–अलग समूहों में किया जाता है। गढ़वाली वेशभूषा और आभूषणों से सजे युवक–युवतियां इसमें हिस्सा लेते हैं। आमने–सामने युवक युवतियां पैर आगे बढ़ाकर बायें से बायां हाथ और दायें से दायां हाथ अपने सामने के नर्तक से मिलाते हैं। फिर एक एक कदम आगे पीछे चलकर हाथ मिलाते हैं और उसके बाद अपने स्थान पर घूम–घूम कर ताली बजाते हैं। पंक्तियां धीरे–धीरे एक वृत्त का रूप ले लेती हैं और अंत में पैरों की गति और हाथों द्वारा बनायी जाने वाली ताली की लय एक हो जाती है। इसके बोल प्राय: चुहुल भरे चुलबुले श्रृंगारिक सवाल जवाब के रूप में होते हैं।

उदाहरणार्थ–

सवाल– नणद तेरा दादु कख जयूँच
जवाब– दादु सुनार की ओटी च
सवाल– ओटी बैठीक कुदा कुदों च
जवाब– नथ बेसर गढॉ दीच।

यह नृत्य गीत मल्हार की सुख की अभिलाषा है। उसी सरलता जैसे प्रकृति चारो ओर फूल बिखेर कर चुराती है। संभवत: इसी कारण इसका नाम चौंपुला है।

छाया चित्र : **राकेश सिन्हा** **विजय नरेश**
अंग्रेजी अनुवाद : **सुशीला मिश्रा**

निदेशक संस्कृति विभाग उ.प्र. के लिये निदेशक भारतेन्दु नाट्य अकादमी ए-2/58, गोमतीनगर लखनऊ द्वारा प्रकाशित एवम् शिवम् आर्ट्स 211, निशातगंज, लखनऊ दूरभाष-386389 द्वारा मुद्रित।